Volume : 4 | Issue : 9 | Sept 2015 ISSN - 2250-1991

Research Paper Economics

कृषि क्रियाओं के निरीक्षण में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका
Krushi Kriyao Ke nirikshan me gramin mahilao ki bhumika

Dr. SUNITA BENIWAL

KEYWORDS

I प्रस्तावना

कृषि कार्यों में महिलाऐं महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। क्षेत्रीय घटकों व परिवार की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के आधार पर महिलाऐं कृषि कार्यों में मोटे–तौर पर तीन तरह से शामिल रहती हैं, प्रथम–मजदूरों की हैसियत से, द्वितीय–अपने खेतों में खेती के काम करने में और तीसरे रूप में ये कृषि उत्पादन के क्रम में प्रबन्धक के रूप में1 अर्थात् कृषि कार्यों में महिलाऐं निरीक्षक/प्रबन्धक के रूप में भूमिका निभाती हैं। निरीक्षक के रूप में यदि महिलाओं की भागीदारी बढ़ती है तो यह उनके सशक्तिकरण में सहायक है।

II साहित्य पुनरावलोकन

ˆपजव ;1992द्धए दक्षिण एशिया के अध्ययन में पाया कि बड़े भूमि के आकार वाले परिवारों की महिलाऐं कृषि श्रमिकों का निरीक्षण करती हैं, साथ ही महिला श्रमिकों से कृषि सूचनाओं का आदान–प्रदान करती हैं जिससे भूमि मालिकों एवं श्रमिकों दोनों को लाभदायक परिणाम प्राप्त होते हैं।

III अध्ययन पद्धति

यह अध्ययन राजस्थान राज्य के टोंक जिले की निवाई तहसील के छः गांवों से सम्बन्धित हैं। गांवों के चयन के लिए स्तरीकृत निदर्शन विधि ˆ(जतंजपपिमक ˆउचसपदह डमजीवक) को अपनाया गया। इन छः गांवों से 150 महिला उत्तरदाताओं का चयन किया गया। साथ ही पुरूषों की स्थिति से महिलाओं के तुलनात्मक अध्ययन की जिज्ञासावश 50 पुरूष उत्तरदाताओं का भी विभिन्न गांवों से चयन कर सूचनाएं एकत्रित की गई। वर्तमान अध्ययन प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित है। प्राथमिक तथ्यों के संकलन के लिए अनुसूची प्रविधि का प्रयोग किया है। प्राथमिक सामग्री का संकलन अनुसंधान क्षेत्र में जाकर चयनित उत्तरदाताओं से प्रत्यक्ष सम्पर्क करके किया गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण की दृष्टि से कृषि क्रियाओं के निरीक्षण में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका के लिए स्वहपज डवकमस प्रयुक्त किया है। क्योंकि आश्रित चर गुणात्मक प्रकृति का है। स्वहपज डवकमस से प्राप्त परिणामों की सार्थकता जांच का विभिन्न सार्थकता–स्तरों (1:ए 5:ए 10:) पर परीक्षण किया गया है।

IV परिणाम एवं विश्लेषण

कृषि कार्यों के निरीक्षण में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका का विश्लेषण कम विकसित गांवों, मध्यम विकसित गांवों तथा अधिक विकसित गांवों के लिए पहले पृथक–पृथक रूप में एवं फिर एकीकृत रूप में किया गया है।

विभिन्न गांवों में कृषि कार्यों के निरीक्षण मेंग्रामीण महिलाओं एवं पुरूषों की भूमिका:

विभिन्न गांवों में महिलाओं एवं पुरूषों की निरीक्षक के रूप में भूमिका बुआई, खाद डालना, घास–पात हटाना, कटाई एवं सिंचाई क्रियाओं तक सीमित पाई गई जबकि अन्य क्रियाओं में यह भूमिका ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं है।

तालिका 1 – विभिन्न गांवों में कृषि कार्यों के निरीक्षण में ग्रामीण महिलाओं एवं पुरूषों की भूमिका

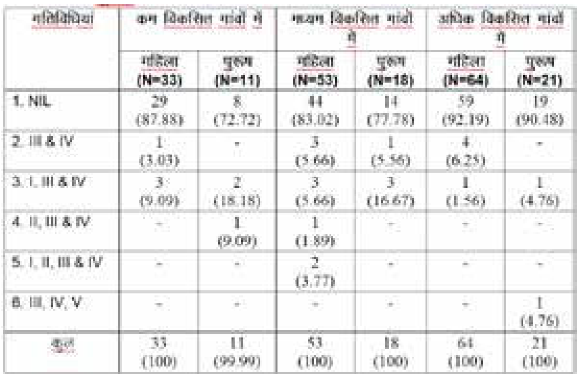

गतिविधियां	कम विकसित गांवों में		मध्यम विकसित गांवों में		अधिक विकसित गांवों में	
	महिला (N=33)	पुरूष (N=11)	महिला (N=53)	पुरूष (N=18)	महिला (N=64)	पुरूष (N=21)
1. NIL	29 (87.88)	8 (72.72)	44 (83.02)	14 (77.78)	59 (92.19)	19 (90.48)
2. III & IV	1 (3.03)	-	3 (5.66)	1 (5.56)	4 (6.25)	-
3. I, III & IV	3 (9.09)	2 (18.18)	3 (5.66)	3 (16.67)	1 (1.56)	1 (4.76)
4. II, III & IV	-	1 (9.09)	1 (1.89)	-	-	-
5. I, II, III & IV	-	-	2 (3.77)	-	-	-
6. III, IV, V	-	-	-	-	-	1 (4.76)
कुल	33 (100)	11 (99.99)	53 (100)	18 (100)	64 (100)	21 (100)

नोट– कोष्ठक में दिये गये आँकड़े प्रतिशत को व्यक्त कर रहे हैं।

I = बुआई, II = सिंचाई , III = घास–पात हटाना, IV = कटाई, V = खाद डालना

कम विकसित गांवों में तथ्यों से स्पष्ट है कि कृषि क्रियाओं में केवल 12.12: महिलाऐं ही निरीक्षण कार्यों में भूमिका निभाती हैं। जब कि पुरूषों के लिए यह प्रतिशत 27.27 है। महिलाओं में से 3.03: महिलाऐं केवल दो प्रकार की क्रियाओं (घास–पात हटाना एवं कटाई) में संलग्न है। जबकि 9.09: महिलाएं तीन प्रकार की गतिविधियों (I, III & IV) में भागीदारी निभाती हैं। अर्थात् कम विकसित गांवों में कृषि कार्यों के निरीक्षण में महिलाओं की अपेक्षा पुरूषों की प्रभुत्वकारी भूमिका है। मध्यम विकसित गांवों में कृषि क्रियाओं में केवल 16.98: महिलाऐं निरीक्षण कार्य करती हैं जबकि 22.22: पुरूष उत्तरदाता निरीक्षण कार्य करते हैं। 5.66: महिलाऐं केवल III & IV क्रियाओं में संलग्न है। जबकि 3.77: महिलाऐं (I, II, III & IV) चारों प्रकार की क्रियाओं में भागीदारी निभाती हैं। पुरूषों के सम्बन्ध में 5.63: पुरूषों की भूमिका III & IV क्रियाओं तक सीमित है। जबकि 2.82: पुरूष चारों प्रकार की क्रियाओं में संलग्न हैं। संक्षेप में मध्यम विकसित गांवों में भी महिलाओं की अपेक्षा पुरूष उत्तरदाताओं का अधिक प्रतिशत भाग निरीक्षण कार्यों में भागीदारी निभाता है। अधिक विकसित गांवों में कृषि गतिविधियों में 7.81: महिलाऐं निरीक्षण कार्य में भूमिका निभाती हैं। जबकि 9.52: पुरूष इन कार्यों में संलग्न है। 6.25: महिलाओं की निरीक्षक के रूप में भूमिका III & IV क्रियाओं तक सीमित है। 1.56: महिलाऐं I, III & IV क्रियाओं में संलग्न हैं। जबकि I, III & IV क्रियाओं में संलग्न पुरूषों का प्रतिशत 4.76 है।

कुल मिलाकर कृषि क्रियाओं में ग्रामीण महिलाओं एवं पुरूषों की निरीक्षण कार्य में भूमिका को देखा जाए तो महिला उत्तरदाताओं की तुलना में पुरूषों का ही अधिक प्रतिशत भाग निरीक्षण कार्यों में संलग्न है।

तीनों प्रकार के गांवों में को एक साथ लेने पर एकीकृत रूप में महिलाओं की भूमिका

कृषि क्रियाओं में ग्रामीण महिलाओं एवं पुरूषों की निरीक्षण कार्यों में भूमिका सम्बन्धी तथ्यों को तालिका–2 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका–2 कृषि कार्यों के निरीक्षण में ग्रामीण महिलाओं एवं पुरूषों की भूमिका

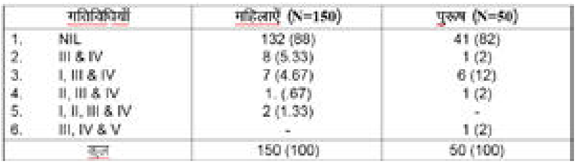

गतिविधियाँ		महिलाएँ (N=150)	पुरूष (N=50)
1.	NIL	132 (88)	41 (82)
2.	III & IV	8 (5.33)	1 (2)
3.	I, III & IV	7 (4.67)	6 (12)
4.	II, III & IV	1. (.67)	1 (2)
5.	I, II, III & IV	2 (1.33)	-
6.	III, IV & V	-	1 (2)
कुल		150 (100)	50 (100)

नोट– कोष्ठक में दिये गये आँकड़े प्रतिशत को व्यक्त कर रहे हैं।

I = बुआई, II = सिंचाई , III = घास–पात हटाना, IV = कटाई, V = खाद डालना

कृषि गतिविधियों से सम्बन्धित तथ्यों के आंकलन एवं विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कृषि क्रियाओं के निरीक्षण में 12: महिलाऐं योगदान देती हैं। जबकि 18: पुरूष निरीक्षण कार्यों में संलग्न हैं। इनमें से 5.33: महिलाओं की भूमिका प्प – प्ट क्रियाओं तक सीमित है। 4.67: महिलाऐं प ए प्प – प्ट क्रियाओं में समर्थ पाई गई। जबकि 1.33: महिलाऐं प ए प्प ए प्प – प्ट क्रियाओं मे संलग्न हैं। पुरूषों की स्थिति में 12: पुरूषों की भूमिका प ए प्प – प्ट क्रियाओं में समर्थ पाई गई।

कृषि क्रियाओं में ग्रामीण महिलाओं की निरीक्षक के रूप में भूमिका एवं इसे प्रभावित करने वाले कारकों के मध्य सम्बन्ध

कृषि क्रियाओं में ग्रामीण महिलाओं की निरीक्षक के रूप में भूमिका को अनेक चर प्रभावित करते हैं। इस संबंध के मात्रात्मक माप हेतु प्रयुक्त लॉगिट मॉडल से प्राप्त परिणाम तालिका–3 में दिये गये है:–

तालिका–3 : कृषि कार्यों के निरीक्षण में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका तथा इसे प्रभावित करने वाले कारक (लॉगिट मॉडल)

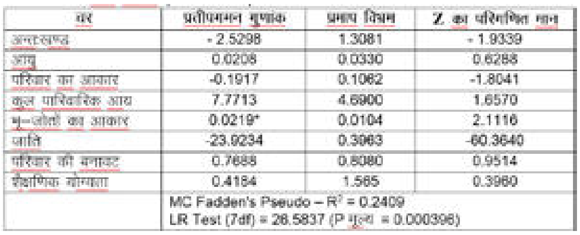

चर	प्रतीपगमन गुणांक	प्रमाप विभ्रम	Z का परिगणित मान
अन्तःखण्ड	- 2.5298	1.3081	- 1.9339
आयु	0.0208	0.0330	0.6288
परिवार का आकार	-0.1917	0.1062	-1.8041
कुल पारिवारिक आय	7.7713	4.6900	1.6570
भू–जोतों का आकार	0.0219*	0.0104	2.1116
जाति	-23.9234	0.3963	-60.3640
परिवार की बनावट	0.7688	0.8080	0.9514
शैक्षणिक योग्यता	0.4184	1.565	0.3960
	MC Fadden's Pseudo – R^2 = 0.2409 LR Test (7df) = 28.5837 (P मूल्य = 0.000396)		

* Significant at 0.05 Level of Probability.

गुणात्मक चरों को देखा जाये तो केवल जाति चर के साथ ही कृषि कार्यों के निरीक्षण में महिलाओं की भूमिका का ऋणात्मक एवं सार्थक सम्बन्ध पाया गया। जबकि मात्रात्मक चरों में से केवल भू–जोतों के आकार के साथ ही धनात्मक व सम्बन्ध सार्थक सम्बन्ध पाया गया। अर्थात् अधिक भूमि एवं पिछड़ा व सामान्य वर्ग की महिलाऐं कृषि कार्यों के निरीक्षण में अधिक भागीदारी निभाती हैं।

सभी स्वतन्त्र चरों के कृषि कार्यों के निरीक्षण में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका के साथ सम्बन्ध को देखा जाये तो यह 5ः सार्थकता – स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक पाया गया। चूंकि स्त् ज्मेज त्र 26ण्5837 है। जिसका च मूल्य त्र0ण्000396 प्राप्त हुआ है जो कि काफी कम है।

निष्कर्ष

कृषि गतिविधियों के निरीक्षण में भूमिका को देखा जाये तो महिलाओं की सर्वाधिक भागीदारी मध्यम विकसित गांवों ;16ण्98ःद्ध में पाई गई। जबकि पुरूषों के सम्बन्ध में कम विकसित गांवों ;27ण्27ःद्ध में सर्वाधिक भागीदारी पाई गई। संक्षेप में कहा जाये तो तीनों ही स्तर के गांवों में महिलाओं की अपेक्षा पुरूषों का अधिक प्रतिशत भाग कृषि कार्यों के निरीक्षण में संलग्न है। कृषि गतिवधियों में महिलाओं की भूमिका के साथ केवल भू–जोतों का आकार एवं जाति चर का ही सार्थक सम्बन्ध पाया गया। सभी संयुक्त चरों के प्रभाव की दृष्टि से यह सम्बन्ध सार्थक सिद्ध पाया गया।

नीतिगत सुझाव

वर्तमान अध्ययन के अनुसार कृषि कार्यों के निरीक्षण में महिलाओं की भूमिका तथा जाति चर के मध्य ऋणात्मक एवं सार्थक सम्बन्ध पाया गया है। अर्थात् निम्न जाति की महिलाओं के पास उच्च जाति की महिलाओं की तुलना में सामान्यतः कम जमीन होती है या ये भूमिहीन होती हैं। अतः इनकी आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण ये दूसरों के खेतों पर कार्य करती हैं। अधिकतर भू–स्वामी ही कृषि कार्यों का निरीक्षण करते हैं। अतः निम्न जाति की महिलाओं के लिए रोजगार के अन्य अवसर उपलब्ध कराये जाने चाहिए जिससे कि इस जाति की महिलाओं में भी आत्मसम्मान की भावना को जागृत किया जा सकता है।

REFERENCES

Devi Laxmi (1988), Rural Women Management in Farm and Home, Northern Book Centre, New Delhi. | Anand, P.S.B., Reddy, G.P. Kannan aur Parswal, B.S. (2002), "Krishi Mein Mahillaaon ki Stithi : Kuch Pehlu" , Unnat Krishi, Varsh-41, Ank – 2, March-April. | Hosamni, V.B. and Sundarswamy, B. (1996), "Factors Associated With Knowledge Level at Rural Women", Indian Journal of Ext. Edu., Vol. 32, Nos. 1-4.